Samyak
An Institute For Civil Services

DAILY MAINS ANSWER WRITING – 13 MAY

Discuss the geopolitical and economic consequences of unilateral tariff measures by developed economies like the USA. (150 words)

The unfolding US-China trade war, marked by US President's aggressive tariff policy and China's retaliation, has triggered unprecedented disruptions in global trade and financial markets. The consequences are being felt across continents, affecting investors, producers, and policymakers.

Immediate Impact of tariff measures

- Global stock markets plunged: Hang Seng (-13%), Nikkei (-8%), Kospi (-5.6%).
- Indian indices (Sensex, Nifty) dropped ~3%, wiping out over ₹20 lakh crore in investor wealth.
- Brent crude prices fell 15% in April due to expected demand slowdown.
- Gold and other commodities declined, reflecting investor risk aversion.
- Market volatility surged, triggering panic selling and capital outflows.
- Trade wars raised input costs, hurt exports, and reduced corporate investment, slowing global growth.
- Mixed international responses: some retaliated with tariffs, others sought trade talks.
- Over 50 countries reportedly approached the US for negotiations.
- China advocated for multilateralism, opposing US unilateralism.
- Rise of Neo-Mercantilism: Shift from free trade to economic nationalism and tariff barriers.
- Economic Fragmentation: Disruption of global value chains; rise in bilateral trade deals excluding poorer nations.
- Emerging Markets Under Pressure: Foreign investment outflows risk triggering inflation and currency instability.

The trade war marks a possible shift toward a neo-mercantilist global economy, driven more by national interest than global cooperation. With rules-based trade under threat, countries must act prudently to safeguard economic stability, uphold open trade norms, and restructure global alliances.

Samyak An Institute For Civil Services

संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा एकतरफा टैरिफ के भू-राजनीतिक और आर्थिक परिणामों पर चर्चा करें। (150 शब्द)

अमेरिकी राष्ट्रपति की आक्रामक टैरिफ नीति और चीन की जवाबी कार्रवाई के कारण अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध ने वैश्विक व्यापार और वित्तीय बाजारों में अभूतपूर्व व्यवधान पैदा कर दिया है। इसके परिणाम पूरे महाद्वीप में महसूस किए जा रहे हैं , जिससे निवेशक, उत्पादक और नीति निर्माता प्रभावित हो रहे हैं।

टैरिफ़ का तत्काल प्रभाव

- **वैश्विक शेयर बाजारों में गिरावट आई:** हैंग सेंग (- 13%), निक्केई (-8%), कोस्पी (-5.6%)।
- **भारतीय सूचकांक (सेंसेक्स , निफ्टी) में ~3% की गिरावट आई** , जिससे निवेशकों को ₹20 लाख करोड़ से अधिक की क्षति हुई।
- अप्रैल में अपेक्षित मांग में कमी के कारण **ब्रेंट क्रूड की कीमतों में 15% की गिरावट** आई।
- **सोने और अन्य वस्तुओं की कीमतों में गिरावट**, जो निवेशकों के जोखिम से बचने को दर्शाती है।
- **बाजार में अस्थिरता बढ़ी,** जिससे घबराहट में बिक्री और पूंजी का बहिर्वाह शुरू हो गया।
- **व्यापार युद्धों ने इनपुट लागत बढ़ाई**, निर्यात को क्षति पहुचाई और कॉर्पोरेट निवेश को कम किया, जिससे वैश्विक विकास की रफ़्तार धीमी हुई।
- **मिश्रित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ:** कुछ देशों ने जवाबी कार्रवाई की , अन्य ने व्यापार वार्ता की मांग की।
- **चीन ने बहुपक्षवाद की वकालत की,** अमेरिकी एकतरफावाद का विरोध किया।
- **नव-व्यापारवाद का उदय:** मुक्त व्यापार से आर्थिक राष्ट्रवाद और टैरिफ बाधाओं की ओर संक्रमण।
- **आर्थिक विखंडन:** वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में व्यवधान ; गरीब देशों को छोड़कर द्विपक्षीय व्यापार सौदों में वृद्धि।
- **उभरते बाजार दबाव में:** विदेशी निवेश के बहिर्गमन से मुद्रास्फीति और मुद्रा अस्थिरता बढ़ने का जोखिम है।

व्यापार युद्ध एक नव-व्यापारवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था की ओर संभावित बदलाव को दर्शाता है, जो वैश्विक सहयोग से ज़्यादा राष्ट्रीय हित से प्रेरित है। नियम-आधारित व्यापार के ख़तरे में होने के कारण , देशों को आर्थिक स्थिरता की रक्षा करने , खुले व्यापार मानदंडों को बनाए रखने और वैश्विक गठबंधनों को फिर से संगठित करने के लिए विवेकपूर्ण तरीके से काम करना चाहिए।